आने वाला कल
ना मानों तो बहता पानी...
कड़ी सं.– 40

आलेख व अनुसंधानः डॉ. अनुराग शर्मा
संकल्पना और समन्वय : डॉ. बी.के. त्यागी

परिचयः

सूत्रधारः आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई को लेकर कई अटकलें जारी हैं, खासतौर से भारत में इसकी उपयोगिता को लेकर...पर जैसा कहा है कि ये सब अटकलें हैं, भारत में एआई की उपयोगिता भी बहुत है और इसी कारण इसमें सरकारी और निजी निवेश भी तेजी से बढ़ रहा है। देश में एआई का बाजार करीब पचास हजार करोड़ रुपये का है और इसमें तेजी से बढ़ोतरी जारी है। कई लोगों को लगता है कि भारत में इसका उपयोग मोबाइल, टीवी, मार्केटिंग आदि तक ही सीमित है और कुछ लोग मानते हैं कि इसके आने से निजता में दखल बढ़ेगा और मानव की टेक्नोलॉजी पर निर्भरता बढ़ेगी...पर यहां भी भ्रम की स्थिति है, क्योंकि एआई की उपयोगिता तो अब हर क्षेत्र में स्थापित हो रही है और इसी भ्रम और भ्रांतियों को दूर करेगा हमारा धारावाहिक – *आने वाला कल* – जिजजसकी आज की कड़ी है– *ना मानो तो बहता पानी...*

पात्र

उमेश जीः	**55 वर्ष, पत्रकार और एक्टिविस्ट**
आरुलः	**25 वर्ष का इंजीनियर जो स्टार्ट– अप शुरू करने जा रहा है**
विनीतः	**50 वर्ष, आरुल के पिता और फौज में इंजीनियर**
सारिकाः	**48 वर्ष, आरुल की मां और गृहणी**
ओमः	**उमेश जी का बेटा और आरुल का स्टार्ट–अप में पार्टनर बनने को इच्छुक**

दृश्य 1

(घर की घंटी बजने की आवाज, दरवाजा खुलने की आवाज...)

विनीतः आइए...आइए...उमेश जी, क्या बात है आज संड़े को सुबह–सुबह...पत्रकारिता का प्रैशर कम चल रहा है क्या?

– हंसी –

उमेशः नहीं विनीत भाई, बस ये ओम को आरुल से मिलवाना था, आजकल के बच्चे हैं, काम कम करते हैं और सोचते अधिक हैं...सच कहूं तो सपने ज्यादा देखते हैं...

विनीतः अरे वाह ओम आओ...उमेश जी, सपने देखेंगे तभी तो पूरा करने के लिए प्रयास भी करेंगे...बिना सपनों के कैसी उड़ान? आइए बैठिए...

(कुर्सी वगैरह खिसकने की आवाजें...)

सारिकाः नमस्ते उमेश भाईसाहब, अरे वाह आज तो ओम भी आया है। कैसे हो बेटा और मम्मी कैसी हैं?

ओमः सब ठीक है सारिका आंटी, मम्मी भी आना चाह रही थीं, पर वो टिन्नी का कल एक्ज़ाम है ना, इसीलिए मम्मी घर पर रुक गईं...

सारिकाः अरे, हां, बताया तो था, शशि ने...हां अभी तो टिन्नी के ऑनलाइन एक्ज़ाम शुरू हैं ना? मैं तो भूल ही गई थी, अच्छा जाते में छोले लेते जाना, मैंने मम्मी को बोल दिया है। भाईसाहब, घर में छोले–कचौड़ी बन रहें हैं...टिन्नी और शशि के लिए भी बनवा दिए हैं...

उमेशः **हसंते हुए–** अरे सारिका छोले और कचौड़ी की खुशबू तो पूरी सोसायटी में आ रही है, मैंने सोचा सही टाइम है तुम्हारे घर आने का...

– जोर से हंसी का सम्मिलित ठहाका –

विनीतः बिल्कुल सही सोचा आपने, आरुल जरा दही लेने गया है, अभी आता ही होगा, अंदर मनीषा कचौड़ी बना रही है, पूरी सोसायटी में उसके हाथ के खाने की सभी तारीफ करते हैं, इसलिए हमने भी इस महीने से मनीषा को अपने यहां खाना बनाने के लिए रख लिया है...

ओमः अरे, वाह मनीषा आंटी तो सभी कुछ अच्छा बनाती हैं, वो ताश्या के घर भी खाना बनाने जाती हैं ना, ताश्या भी कह रही थी, उसके लिए तो मनीषा आंटी पास्ता भी बनाती हैं...

सारिकाः तो ठीक है ओम अगली बार पास्ता ही बनेगा...तुम भी आना और टिन्नी और ताश्या को भी ले आना। अच्छा अब बताओ तुम्हारी नई जॉब कैसी चल रही है?

उमेशः ये तुमने ठीक पूछा सारिका, जॉब को ज्वाइन करे एक महीना भी नहीं हुआ है और ये साहब अभी से किसी स्टार्ट–अप का आइडिया लेकर आ गए हैं...इसीलिए तो आरुल से मिलाने लाया हूं...

विनीतः अरे वाह...ये तो बहुत अच्छी बात है ओम...स्टार्ट–अप का आइडिया क्या सोचा है?

उमेशः **थोड़ा खीज़ते हुए–** ये ही तो गलत बात है विनीत...अच्छी खासी नौकरी छोड़कर लड़का अपना स्टार्ट–अप खड़ा करने की सोच रहा है और अगर नाकाम रहा तो ना नौकरी के रहेंगे और ना घर के और लोगों के ताने वो अलग से...

ओमः पर पापा कुछ पाने के लिए ज़ोखिम तो उठाना ही पड़ता है...आप भी पढ़ाने के लिए शहर आए थे पर जब पक्की नौकरी नहीं मिली तो पत्रकारिता से जुड़ गए और उसमें सफलता मिलती चली गई...आपने भी तो रिस्क लिया था...

उमेशः अरे तब की बात अलग थी, तब कई मौके थे...आज भला कोई लगी लगाई नौकरी छोड़ता है क्या?

सारिकाः हां...हां...उमेश जी...जरूर छोड़ते हैं, नौकरी...मेरे आरुल ने छोड़ी ना और अब अपने स्टार्ट–अप के लिए उसने अच्छे पैसे भी जुटा लिए हैं...

ओमः हां आंटी, आरुल की कंपनी पर जिस वेंचर कैपिटलिस्ट ने निवेश किया है, उन्हें मेरा भी प्रोजेक्ट पसंद आया है और उन्होंने अलग–अलग काम करने की बजाए साथ मिलकर काम करने की कहा है...

उमेशः अरे उन लोगों तो अपने निवेश देखना है, पर तुम लोगों को आगे अपना घर भी चलाना है। खुद का बिजनेस खड़ा करना इतना आसान नहीं है और ओम तुम और आरुल दोनों इंजीनियर हो, आजकल इंजीनियरों की हालत क्या है, तुम्हे पता ही है...मेरा तो कहना है कि ओम तुम अपनी नौकरी चालू रखो और आरुल भी नौकरी ढूंढ ले...दो साल से मैं उसे भटकता हुआ ही देख रहा हूं...

– दरवाजा खुलने की आवाज –

आरुलः नमस्ते अंकल, अरे ओम...क्या हाल हैं? – **आरुल हंसते हुए –** उमेश अंकल किसे भटकते देख लिया आपने...

सारिकाः तुम्हें और किसे...ले आए दही...

आरुलः दही तो ले आया मम्मी, पर वो सोसायटी में ताश्या ने देख लिया, कह रही थी कि परांठे बन रहे हैं, मैंने कहा कि नहीं कचौड़ी बन रही है तो बस, वो आ ही रही होगी...और उमेश अंकल जीवन तो बना ही भटकने के लिए है...

उमेशः ये किस बाबा ने कहा है...

आरुलः जी बाबा आरुलानंद ने...

– तेज हंसी –

आरुलः सही रास्ते की तलाश में भटकना अंततः लक्ष्य तक पहुंचा ही देता है...बस तय कर लिया तो चलते रहना होता है...मंजिल तो मिल ही जाएगी...

ओमः **चिल्लाकर–** जय बाबा आरुल की...

आरुलः बच्चा ओम...आरुलानंद बाबा...

– तेजी हंसी –

उमेशः ये कोई हंसी का विषय नहीं है...जीवन का सवाल है और वो क्या कहते हैं...वो एआई...आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस...अब तुम काम कर रहे हो या करने की सोच रहे हो, एआई पर...अब बताओ विनीत जिसके नाम में ही आर्टिफिशियल यानी कृत्रिम शब्द हो उसमें कैसे देश या दुनिया या हमारे बच्चों का भविष्य हो सकता है?

विनीतः **हंसते हुए–** कुछ अलग ही कहने की कोशिश की है आपने उमेश जी, पर जिस तेजी से लगभग हर क्षेत्र में एआई का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है, मुझे तो लगता है पूरी मानव सभ्यता का भविष्य एआई में ही कहीं छुपा है...

ओमः ठीक कहा विनीत अंकल...एआई में इतनी संभावनाएं हैं...इतनी संभावनाएं हैं कि...कि...

उमेशः कि...क्या...कितनी संभावनाएं हैं?

ओमः असीम संभावनाएं हैं...पापा...

विनीतः हां...ओम ये तो है...

उमेशः हां...सब संभावनाएं विदेशों में हैं...सब विदेशियों के चोंचलें हैं...कुछ नहीं खानी तो दो रोटी ही हैं...इस रोटी के लिए कुछ है तुम्हारी एआई में?

सारिकाः अरे वाह उमेश जी, आपने तो आरुल के स्टार्ट–अप के बारे में ही पूछ लिया...

उमेशः हैं...आरुल स्टार्ट–अप में रोटियां बना रहा...ढ़ाबा खोला है आरुल ने...चल ओम...घर चल...कोई स्टार्ट–अप, विस्टार्ट–अप नहीं खुलेगा...चलो...उठो...

– हंसी –

विनीतः **हंसते हुए–** अरे उमेश जी, आरुल के एआई आधारित स्टार्ट– अप के बारे में सुन तो लो...आपको रोटी और एआई का रिश्ता भी समझ आ जाएगा...

आरुलः तो उमेश अंकल, मेरा सारा काम कृषि यानी एग्रीकल्चर में एआई के उपयोग पर है...

उमेशः कृषि में एआई??? आरुल अब ये एआई क्या खेती करेगी? फिर किसान क्या करेगा?

आरुलः **उमेश** अंकल, एआई के द्वारा हम मौसम, फसल की किस्म, उर्वरकों के उपयोग आदि का आंकलन करके फसल की पैदावार बता देतें हैं, जिससे सरकार खरीद नीति समय रहते बना सकती है, जैसे कितने खरीद केंद्र खोलने हैं और कहां कहां खोलने हैं और यहां तक अनाज भंडारण के लिए कितनी बोरियों की व्यवस्था करनी है...ये सब एआई की सहायता किया जा सकता है...

ओमः ये तो कमाल है, कई बार सही आंकलन नहीं हो पाता है जिस कारण अनाज को बाहर खुले में रखना पड़ता है...तो आरुल एक बात तो खरीद की तैयारी में एआई डाटा का एनालिसेस करके नीति बनाने में मदद करती है, इसके अलावा एग्रीकल्चर के क्षेत्र में और क्या–क्या हो सकता है या हो रहा है?

आरुलः बहुत कुछ है ओम, असल में एआई और मशीन लर्निंग का एग्रीकल्चर में उपयोग काफी होने भी लगा है, बुआई से लेकर, सिंचाई, खाद और फिर कटाई तक में एआई की भूमिका है और ग्लोबल वार्मिंग के कारण हो रहे जलवायु परिवर्तन में भी किसानों का सहारा एआई ही होता जा रहा है...

उमेशः वो कैसे आरुल? जलवायु परिवर्तन से निपटने में अभी तक कामयाबी तो नहीं मिल पाई है?

आरुलः अब उमेश अंकल इसे थोड़ा विस्तार से समझिए...सामान्यतः किसान के स्तर पर खेती में सात चरण होते हैं, जैसे खेत में मिट्टी की तैयारी, बुआई, खाद देना, सिंचाई, खरपतवार से सुरक्षा, कटाई और भंडारण..
.

ओमः और एआई इन सभी चरणों के लिए समाधान दे रही है जैसे मिट्टी की तैयारी के लिए पोषक तत्वों की जांच और उसी के अनुसार खाद का उपयोग यानी जिस तत्व की जितनी कमी है बस उतना ही उपयोग, इससे उर्वरकों की बर्बादी कम होती है और किसानों की लागत में भी कमी आती है...

विनीतः अरे वाह ओम बिल्कुल ठीक कहा तुमने...लगता है तुम भी पूरा होमवर्क करके आए हो...

उमेशः वो मैं भी देख रहा हूं विनीत कि ये बना था कंप्यूटर इंजीनियर फिर खेती की इतनी समझ इसमें कहां से आ गई...मुझे ओम और आरुल का कुछ घालमेल लगता है...

आरुलः **हंसते हुए–** अरे उमेश अंकल...घालमेल आप बाद में समझ लेना अभी खेती किसानी में एआई की भूमिका तो समझिए...हां अंकल तो जैसे ओम ने कहा कि मिट्टी में किन पोषक तत्वों की कमी है ये तो पता चलता ही है साथ ही इसके अनुसार कौन सा पोषक तत्व किस मात्रा में डालना है, ये भी पता चलता है और सबसे बड़ी बात प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग के कारण हो रहे बदलावों के कारण किसानों को कई बार बुआई का समय तय करने में दुविधा होती है, ऐसे में एआई मौसम के बदलावों का सटीक आंकलन करके सही– सही बुवाई का समय बताने में सक्षम हो गई है...

सारिकाः और आरुल तुम बता रहे थे कि सिंचाई में तो एआई ने बहुत क्रांति ला दी है...

ओमः जी आंटी, आरुल क्या, मैं बताता हूं...अब तो प्रिसिशन फार्मिंग का ज़माना आ गया है, मतलब जितनी फसल की जरूरत, फसल को उतना ही पानी...इससे ये लाभ हुआ कि सीधे जड़ों तक पाइपों द्वारा एआई के उपयोग से बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति से पानी पहुंचाने से सतह से सिंचाई करने की तुलना में करीब नब्बे फीसदी तक पानी की बचत होती है। एरोपॉनिक्स विधि में सब कुछ कंट्रोल में रहता है... क्योंकि ये एक बंद प्रणाली है तो इसमें मौसम का प्रभाव ही नहीं होता और ना ही दिन–रात का फर्क पड़ता है। एआई खुद तय करती है कि कब और कितना पानी देना है, कितनी उर्वरक देनी है और यहां तक की कितना प्रकाश देना है...सब एआई ही तय कर देती है...एआई आधारित पूरी ऑटोमेटिक प्रणाली...

विनीतः हां, और अब तो कीटनाशियों का छिड़काव भी ड्रोन से हो रहा है...

आरुलः अरे पापा, ड्रोन से कीटनाशियों का छिड़काव तो अब पुरानी बात हो गई है, अब तो ड्रोन पूरे खेत में चक्कर लगाकर, खेत के किस हिस्से में कीटों का प्रकोप है ये जांच कर लेता है और फिर ये भी तय कर लेता है कि इतने कीटों के लिए कीटनाशी छिड़कने की जरूरत भी है कि नहीं...

उमेशः भई ये क्या बात हुई आरुल? जब कीट हैं तो कीटनाशी का छिड़काव तो होगा ही...

ओमः अरे पापा, ये ही तो खूबसूरती है एआई की...हर कीट नुकसान थोड़े ना पहुंचातें हैं, कुछ तो फसल के लिए अच्छे भी होते हैं और दूसरी जरूरी बात की हमें कीट नियंत्रण करना है, उनका खात्मा नहीं...तो ड्रोन इन्हीं बातों का ध्यान रखकर ही कीटनाशियों का छिड़काव करता है, वो भी कम से कम...

सारिकाः अरे वाह ओम...तो तुम्हारे एआई वाले ड्रोन को पर्यावरण की चिंता भी है...

विनीतः क्यों ना हो सारिका, अब मानव ने पर्यावरण की चिंता की नहीं, कोई नहीं अब मशीन ही कर लेगी... अच्छा आरुल ये बताओ कि फसल की कटाई में एआई की क्या भूमिका है?

आरुलः पापा, फसल कटाई में एआई आधारित मशीनें तैयार हैं जो फसल के सही पकने का समय जान लेती हैं। इसके अलावा अगर बड़ा खेत है तो मशीने कितनी दूर चलें और किस कोण पर रहें जिससे कम

समय में कम ईंधन खर्च करके अधिक से अधिक फसल की कटाई हो सके। इसके अलावा कौन–सी फसल के लिए किस प्रकार के कटाई उपकरण की आवश्यकता है और ये उपकरण कहां पर उपलब्ध होगा, ये जानकारी भी एआई आधारित एप्प के द्वारा जल्द ही किसानों को मिलने लगेगी... क्यों ओम?

उमेशः **थोड़ा अचरज से–** क्यों ओम? ओम को क्या पता? विनीत मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है...

ओमः क्या पापा, आप को तो हर बात में गड़बड़ ही लगती है...

उमेशः लगे क्यों ना ओम, तुम लोग नौकरियां छोड़कर पता नहीं किस टेक्नोलॉजी के चक्कर में पड़ गए हो... और मेरा सवाल तो ये है कि जब सब खेती एआई आधारित मशीनें ही करेंगी तो किसान क्या करेगा?

आरुलः हां उमेश अंकल, ये सवाल आपका दुरुस्त है...बस एक बात...कहते हैं कि आज किसी व्यक्ति के पास समय नहीं है, अगर उसे समय मिल जाए तो वो क्या करेगा?

ओमः बताइए पापा?

उमेशः अगर समय मिल जाए, तो व्यक्ति कुछ ना कुछ तो करेगा ही, कुछ नया सीखेगा, कुछ नया करेगा, जो रिश्ते छूट गए उन्हें फिर से जोड़ेगा, अपने और अपनों के सपने पूरे करने की कोशिश करेगा...कुछ ना कुछ तो करेगा ही...

आरुलः बस अंकल, किसान भी फसलों के मूल्य संवर्धित उत्पाद बनाने की सोचेगा, अपनी कमाई में और इजाफा करेगा, नई टेक्नोलॉजियों की और तलाश करेगा, जो उसके श्रम में कमी करें, लागत में कमी करें और आमदनी में इजाफा करें...

विनीतः तो तुम्हारा स्टार्ट–अप खेती में टेक्नोलॉजी के समाधान दे रहा है...

ओमः वो तो बताते हैं विनीत अंकल पर अभी एआई की भूमिका भारत में कितनी बढ़ने वाली है, ये तो जान लीजिए...

उमेशः रुको...रुको...रुको...ओम पहले तो तू ये बता कि तुझे इतना कुछ आरुल के स्टार्ट–अप के बारे में कैसे पता और भारत में एआई की भूमिका पर तुझे इतनी जानकारी कैसे?

आरुलः अरे उमेश अंकल, ओम भी तो डाटा एनालिसेस का काम करता है, तो टेक्नोलॉजी के बारे में अपडेट तो रहेगा ही। वैसे भी अंकल स्वास्थ्य सेवाओं से लेकर, अंतरिक्ष की यात्रा तक सभी में एआई का उपयोग हो रहा है, फौज से लेकर बिजली आपूर्ति तक में एआई का उपयोग चालू है...

ओमः और व्यापार से शेयर बाजार तक सभी में एआई का उपयोग हो रहा है। अब तो एआई के द्वारा लोग किसी कंपनी के शेयर में कब और कितनी पूंजी लगाएं ये तक तय करने लगे हैं। साथ ही रोगों के विरुद्ध इंसानों के युद्ध में भी एआई एक महत्वपूर्ण हथियार बन कर उभर रही है...

सारिकः मैंने तो कहीं पढ़ा था कि कपड़ों से लेकर, मेकअप तक में भी एआई आधारित एप्प काफी अहम होते जा रहे हैं? क्या ये सच है?

आरुलः हां मम्मी, अब एआई के जरिए ये जानना संभव है कि लोगों की मौसम के हिसाब से कपड़ों की क्या पसंद है और किस व्यक्ति को किस रंग के कपड़े पसंद है। ऐसे ही आपके घर के आकार प्रकार के हिसाब से कौन–सा और किस सामग्री का बना फर्नीचर आपके लिए उचित रहेगा ये भी एआई बता देती है...

ओमः जी आंटी, कई कंपनियां एआई आधारित एप्प और अन्य टूल्स के आधार पर ही अपने परिधान, फर्नीचर आदि डिज़ाइन करते हैं। कार कंपनियां तो हमेशा से ही किस देश में सड़कें कैसी हैं और लोगों की क्रय क्षमता क्या है इसके आधार पर कारों के डिज़ाइन और उनकी फ्यूल एफिशिएंसी तय करती हैं, अब इस काम में भी एआई के आने से नए मॉडल ज्यादा तेजी से बाजार में आ रहे हैं...

विनीतः क्या ये सही है कि पानी के जहाज और हवाई जहाज आदि में सामान कैसे लोड होना है या कहें रखा जाना है ये भी एक एआई आधारित एप्प से ही तय होता है?

आरुलः बिल्कुल ठीक पापा, पानी के जहाज और हवाई जहाज में हमेशा से संतुलन की सबसे अधिक अहमियत होती है...वैसे तो इंजीनियर इस काम को बखूबी करते रहें हैं, लेकिन एआई के आने से लोडिग का काम बेहद आसान और जल्दी होने लगा है, जैसे एआई आधारित मशीनें ही तय कर लेती हैं कि कहां कहां किस वजन और आकार का सामान जाना है, और फिर कन्वेयर बेल्ट से या फिर बड़ी केन के जरिए सामान उस जगह पर पहुंचा दिया जाता है...

सारिकाः आरुल ये तो समझ आता है और रोबोट तो काफी समय से उद्योग में काम पर लिए ही जा रहे हैं, लेकिन एआई को लेकर भारत में माहौल क्या है? सरकारी नीतियां क्या एआई के फेवर में हैं?

ओमः बिल्कुल सारिका आंटी, भारत सरकार ने जून दो हजार अठ्ठारह में ही एआई पर राष्ट्रीय नीति को परिभाषित कर दिया था। सरकार ने – नेशनल स्ट्रेटिजी फॉर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस– एआई फॉर ऑल– यानी सभी के लिए एआई पर डॉक्यूमेंट जारी किया था...

आरुलः सही कहा ओम, नीति आयोग द्वारा पेश किए गए इस पेपर में पांच प्रमुख क्षेत्रों में एआई पर चर्चा की गई है जिनसे वृद्धिदर में बढ़ोतरी होने के साथ अधिक से अधिक लोगों को जोड़ा जा सकेगा...

उमेशः और वो पांच प्रमुख क्षेत्र कौन–कौन से हैं? क्योंकि इसी से तो पता लगेगा कि सच में आम नागरिक के लिए एआई में कुछ है या सिर्फ बातें ही बातें...

ओमः नहीं पापा, बातें ही बातें तो टीवी न्यूज में ज्यादा सुनाई देतीं हैं...**– हंसी** – वैसे सरकार ने जो पांच क्षेत्र एआई के लिए चुने हैं, वो हैं...स्वास्थ्य सेवाएं, कृषि, शिक्षा, शहरी व स्मार्ट सिटी इंफ्रास्ट्रक्चर और परिवहन व मोबिलिटी...

उमेशः अच्छा दिशा तो ठीक है, पर तुम्हारे स्टार्ट–अप के लिए क्या है? अं...मेरा मतलब आरुल के स्टार्ट–अप के लिए क्या है?

आरुलः उमेश अंकल सरकार ने तो एक तंत्र बना दिया है, हर प्रकार का सहयोग देने की प्रणाली बना दी है, अब काम क्या करना है, एआई के उपयोग से क्या नया समाधान ढूंढना है, ये तो हमें तय करना है... मतलब मेरे और ओम जैसे युवाओं को...

ओमः हां, आरुल...काम तो हमें ही करना है, समस्याएं समझकर उनका जो भी संभव हो उसका सार्थक समाधान ढूंढना...और इसमें एआई बेहद मददगार और सार्थक साबित हो रही है...

उमेशः तो आरुल तुमने कृषि क्षेत्र को चुना है और इसी में सीमित रहने का इरादा है क्या?

आरुलः अंकल, तकनीक कहां सीमित रहती है, मानव ने एटम को तोड़ना सिखा तो बम बना लिया और फिर बिजली भी और अब उपचार भी होता है...एआई में बहुत संभावनाएं हैं, और असल में एआई मानव की तरह सोचने और समझने में सक्षम बनाई जा रही है और कई क्षेत्रों में तो एआई मानव से अधिक उपयोगी साबित हो रही है...

विनीतः तो तुम से कहना चाहते हो आरुल की एआई मानव की जगह ले लेगी???

आरुलः नहीं पापा, एआई मानव की जगह कभी नहीं ले सकती परंतु मानव की तरह सोचकर, सार्थक और प्रांसगिक निर्णय ले सकती है, इसी कारण दुनियां के लगभग सभी देश आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर अपनी–अपनी नीतियां तैयार कर रहें हैं...

उमेशः पर एक बात समझ नहीं आई, कोई मशीन मानव की तरह कैसे सोच सकती है? अब तुम ही बताओ सारिका, क्या ये संभव है?

सारिकाः अब ये सवाल तो मेरा भी है उमेश जी...क्या ये संभव है?

ओमः अरे सारिका आंटी, ऐसा क्यों नही हो सकता, अब सोचिए अगर पापा पत्रकार हैं और विनीत अंकल इंजीनियर...ऐसा क्यों है?

उमेशः ऐसा इसलिए है कि उनकी रूचि विज्ञान में थी और मेरी साहित्य और रातनीति में...

विनीतः वैसे उमेश जी ने भी सही कहा, लेकिन वैसे जो भी सीखा, अपनी अपनी पढ़ाई से ही सीखा...

आरुलः ये ठीक कहा पापा, असल में जो भी हम हैं अपनी शिक्षा के कारण ही हैं, चाहे स्कूल से सीखा हो या घर से...पर सब सीखा इसी दुनिया से...ठीक...

सारिकाः तो इसमें ऐसी क्या खास बात है...ये तो होता ही है...वो कहते हैं ना जैसी शिक्षा वैसे ही लक्षण...

उमेशः या वैसा ही चरित्र...

ओमः हां, बिल्कुल सही...यानी ये तो हम मानते हैं कि जो भी हम हैं वो उसी कारण है जो हमने यहां यानी इस दुनिया से सीखा है...ठीक...

विनीतः अरे ठीक भई ठीक...तुम दोनों कहना क्या चाहते हो?

उमेशः अरे विनीत ये दोनों बस ये बताना चाहते हैं कि हममें तो कुछ दिमाग है नहीं, जो पढ़ लिया वो ही बन गए...अपने अनुभव से तो कुछ सीखा ही नहीं...अरे तुम दोनों सुन लो...बाप हैं तुम्हारे, जो पढ़ा था वो तो ठीक है, पर सफल पत्रकार तो जीवन के अनुभव ने ही बनाया है...

आरुलः बस उमेश अंकल ये ही तो एआई में होता है, उसमें भी सब ज्ञान ठूंसा जाता है, फिर वो भी आदमी की तरह सोचने लगती है...

सारिकाः सिर्फ आदमी की तरह???

ओमः अरे...नहीं...अं...आंटी...आदमी और औरत दोनों की तरह सोचे इसी लिए तो उसमें डाटा फीड किया जाता है...जितना ज्यादा डाटा होगा, उतनी ही मशीन सोचने समझने में सक्षम होगी...यानी जैसे हम लोगों ने बचपन से शिक्षा ली, वो ज्ञान तो मशीन में भरना आसान है,, लेकिन आदमी...अं...मानव की तरह सोचने समझने में सक्षम मशीन बनाने के लिए लोगों का अधिक से अधिक डाटा कंप्यूटर में फीड किया जाता है...

आरुलः इसीलिए तो सोशल मीडिया से सभी जुड़ रहे हैं...अब है तो लोगों को जोड़ने का जरिया पर असल में मशीन लर्निंग के लिए सबसे बढ़िया डाटा का स्रोत...ऐसे ही टीवी पर आप क्या देख रहें हैं? कितनी देर देख रहें हैं? कौन देख रहा है? ये सब क्या है मशीन के सीखने के लिए डाटा ही तो है...बस ये ही डाटा मशीन को आदमी...अं...मानव की तरह सोचने समझने लायक बनाता है...

उमेशः अच्छा तो हम जो फोन या टीवी पर देखते सुनते हैं...वो सब एआई को सीखने–समझने के लिए डाटा ही है...

ओमः पापा फोन–टीवी ही नहीं ये आप जो कार में एफएम वगैरह सुनते हैं...ये सब भी तो डाटा ही है...

आरुलः पर ये भी सही बात है कि डाटा और खासतौर से निजी डाटा की सुरक्षा के लिए तमाम कानून हैं और इसका कोई भी उल्लंघन करे, तो सजा का प्रावधान भी है...

विनीतः वैसे मैंने सुना है कि एआई ने तो कई देशों में कई प्रमुख काम संभाल लिए हैं, जैसे कंपनियों में लोगों की भर्ती करना, ट्रैफिक कंट्रोल करना, नियमों का उल्लंघन करने वालों का चालान काटना आदि...

ओमः विनीत अंकल ये तो कुछ भी नहीं...अब तो न्यूज पढ़ने का काम भी एआई के जरिए होने लगा है...

उमेशः ओम अब ज्यादा मत बोल, मैं तेरा बाप भी हूं और पत्रकार भी...**– चिढ़ने वाली आवाज में–** खबरें भी एआई पढ़ रही है...खबरें आज भी इंसान पढ़ता है...मशीन नहीं...हूं...

आरुलः अरे अंकल, पत्रकारों को तो सब पता होता है तो शायद आपने भी सुना हो और देखा हो कि दो हजार अठ्ठारह में नौ नवंबर के दिन चीन के जिन्हुआ न्यूज़ चैनल में खबर एक एआई आधारित मशीन ने

पढ़ी थी और ये रोबोट बिल्कुल आदमी की तरह ही दिख रहा था और अगर वो खुद नहीं बताता तो किसी को पता भी नहीं चलता कि वो रोबोट है...

उमेशः हैं...रोबोट ने खबरें पढ़ीं...हां...हां...कुछ सुना तो था...पर वो तो आदमी ही था...हां...हां...वो तो चीन का फेमस एंकर था...

ओमः पापा, अब आप इतने बड़े पत्रकार हैं और रोबोट और आदमी में फर्क नहीं बता सके...आप भी...

उमेशः **गुस्से से–** वो प्रसिद्ध चीनी न्यूज़ एंकर जैंग ज़ाओ की ही आवाज़ में न्यूज़ पढ़ रहा था...

ओमः अरे वाह पापा, आपने बिल्कुल सही बताया...

उमेशः हां बेटे, तुम्हारा बाप जो हूं...

– तेज हंसी –

विनीतः वाह, उमेश जी आपने तो गुड लैंथ बॉल पर छक्का मार दिया, ये बच्चे हमें बच्चा समझ रहे थे...

उमेशः **हंसते हुए–** अरे विनीत, आप तो आर्मी में इंजीनियर हैं, नई टेक्नोलॉजी, एआई आदि समझते हैं, मैं तो पॉलीटिकल साइंस का विद्यार्थी रहा हूं...फिर पत्रकारिता ने आसपास क्या हो रहा है इसके लिए जागरुक रहना तो सिखा ही दिया है। अब मैं आप सबको एक खबर देता हूं...

ओमः अरे वाह, कैसी खबर पापा?

उमेशः खबर ये है ओम बेटा कि तुमने और आरुल ने मिलकर अपनी स्टार्ट–अप कंपनी खोल ली है...ये तो हमें बता देते...

विनीतः अरे...ये कब हुआ? आरुल तुमने हमें बताया नहीं?

सारिकाः हां आरुल...हमें ये तो पता था कि तुम स्टार्ट–अप शुरू कर रहे हो पर ओम भी तुम्हारे साथ है, ये तुमने बताया नहीं?

आरुलः अरे मम्मी, हम दोनों ही आप सभी को सरप्राइज़ देने वाले थे, पर उमेश अंकल ने ओम को ऐसी डांट पिलाई कि हमें लगा अभी कुछ दिन बाद बता देंगे। पर उमेश अंकल आपको पता कैसे चला?

उमेशः आरुल बेटा, जैसा मैंने पहले कहा था कि...

ओमः **अमिताभ की तरह भारी आवाज में–** रिश्ते में हम तुम्हारे बाप लगते हैं...

– तेज हंसी –

उमेशः वो तो ठीक है...असल में ओम के बर्ताव से मैं ये तो समझ गया था कि ये किसी उधेड़–बुन में है, फिर एक दिन मैंने इसे फोन पर आरुल से बात करते सुना और सारी बात समझ गया। विनीत, ये अपने इरादों में कितने पक्के हैं और अपना विषय कितनी अच्छी तरह समझते हैं, बस मैं तो ये परख रहा था...

– हंसी –

ओमः तो पापा, आपको मेरे और आरुल के कंपनी खोलने से कोई दिक्कत नहीं है?

उमेशः दिक्कत कैसी ओम बेटा, तुम लोग नई टेक्नोलॉजी को आगे लाओगे...उससे कुछ सीखोगे और देश की समस्याओं का हल ढूंढोगे, तो फिर इस प्रवित्र कार्य में कहां आड़े आ सकता हूं...

विनीतः बिल्कुल ठीक कहा उमेश जी, अब दुनिया ने तो आइंसटाइन को भी मंदबुद्धि मान लिया था, पर आज हर इंटेलिजेंट आदमी को आइंसटाइन कह कर बुलाते हैं...अब तुम दोनों अपना स्टार्ट–अप शुरू करो और किसानों की आमदनी के साथ देश की तरक्की में अपना योगदान दो...

सारिकाः बिल्कुल सही कहा विनीत...चलो कचौड़ियां भी तैयार हैं...टिन्नी और ताश्या भी आ रही होंगी...

उमेशः एआई तो बेहद उपयोगी है...हां कुछ लोग इसके लिए नेगेटिव भी है पर ये तो बिल्कुल ऐसे ही है कि मानो तो गंगा जल है...ना मानो तो बहता पानी...मेरा विश्वास है कि आरुल और ओम अपने इस यज्ञ में पूरी तरह सफल होंगे...

ओमः थैंक्यू पापा...आपके इस विश्वास के लिए...

उमेशः अरे ओम पता है ये विश्वास तुम पर...आरुल पर और आज की पीढ़ी पर है...पता है क्यों?

ओमः क्यों पापा?

उमेशः **तेज हंसी के साथ–** क्योंकि रिश्ते में हम तुम्हारे बाप हैं...

– जोरदार सम्मिलित हंसी –

सूत्रधारः आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई को लेकर आज कुछ भ्रांतियां जरुर टूटी होंगी...एआई आज के युग की सबसे बड़ी टेक्नोलॉजी है...ठीक है कि हर समस्या का समाधान एआई नहीं दे सकती, लेकिन एआई मानव विकास के अगले चरण में ले जाने के लिए एक क्रांतिकारी साधन जरूर है। चलिए आज की कड़ी में उमेश जी ने ओम पर भरोसा जताया, बस ये ही तो चाहिए...भरोसा...नई पीढ़ी और नई टेक्नोलॉजी पर भरोसा और हमारा धारावाहिक– *आने वाला कल* – आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में हमारे भरोसे को कायम करने की पहली सीढ़ी है। बस सुनते रहिए *आने वाला कल*... अगली कड़ी में फिर कुछ नई और रोचक जानकारियों के साथ आपसे फिर मिलते हैं, तब तक के लिए नमस्कार...

– समाप्त –